ध्यान दें : (निम्न नोट्स, पवित्र आत्मा नोट्स का अन्तिम पृष्ठ है परन्तु विस्तृत रुप में।)

## 14. पवित्र आत्मा का ऊपर आना सेवकाई के लिए अभिषेक है

1 कुरिन्थियों 10 : 11 "ये बातें उन पर उदाहरणस्वरुप हुई , और ये **हमारी चेतावनी के लिए लिखी गई** जिन पर इस युग का अन्त आ पहुंचा है"

हमें पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति "**में**" और किसी व्यक्ति के "**ऊपर**" के अन्तर को स्पष्टता से समझना चाहिए।

पुराने नियम में :

❖ "अलग किए जाने" तथा सेवकाई के लिए अभिषेक किया जाता था।

निर्गमन 30:22 – 23

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, (23) "तू अपने लिए भी सर्वोत्तम मसाले ले : ... (25) इनसे तू **पवित्र अभिषेक का तेल** बनाना। (26) इसी तेल से तू मिलापवाले तम्बू और साक्षी का सन्दूक, (27) मेंज़ और उसके सब बर्तन, दीवट और उसके पात्र, हौदी और उसके पाए का अभिषेक करना। फिर तू उन्हें **पवित्र** (अलग करना 6942) भी करना कि वे **परमपवित्र** (6942) हों। (30) फिर तू हारुन और उसके पुत्रों का अभिषेक करना, तथा उनको **पवित्र** करना जिससे **वे मेरे लिए याजकीय सेवा करें**। (31) तब तू इस्राएलियों से यह कहना, 'यह तेल मेरे लिए तुम्हारी पीढ़ी –दर–पीढ़ी तक पवित्र अभिषेक का तेल ठहरे।'

❖ ऊपर तथा भविष्यवाणी करना

गिनती 11:16–18 मूसा को लोगों की देख भाल के लिए सहायता चाहिए।

तब यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएली प्राचीनों में से मेरे लिए सत्तर पुरुष जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के प्राचीन और अगुवे हैं, इकट्ठा कर और उन्हें मिलापवाले तम्बू के पास ले आ और वे तेरे साथ वहीं खड़े हों। (17) तब मैं आऊंगा और तुमसे बात करुंगा। **अब तुम पर आत्मा आई है। किन्तु मैं उन्हें भी आत्मा का कुछ अंश दूंगा**। तब वे लोगों की देखभाल करने में तुम्हारी सहायता करेंगे। इस प्रकार, तुमको अकेले इन लोगों के लिएउत्तरदायी नहीं होना पड़ेगा। (24) तब मूसा ने ... प्रजा के प्राचीनों में से सत्तर पुरुषों को भी इकट्ठा किया और उन्हें तम्बू के चारों ओर खड़ा कर दिया। (25) तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उससे बोला , और उस **आत्मा** में से जो मूसा **पर** था कुछ लेकर उन सत्तर प्राचीनों **पर** डाल दिया, और ऐसा हआ कि जब आत्मा उनमें समाया तब वे नबूवत करने लगे, पर बाद में उन्होंने फिर कभी नबूवत नहीं की। (26) परन्तु दो पुरुष छावनी में ही रह गए थे। उनमें से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था और **आत्मा उन पर भी** आई – ये तो उनमें से थे जिनके नाम लिख लिए गए थे परन्तु वे तम्बू के पास नहीं गए थे – और वे छावनी में ही नबूवत करने लगे। (27) तब एक जवान ने मूसा के पास दौड़कर उसे बताया, "एलदाद और मेदाद **छावनी में नबूवत** कर रहे हैं।" (28) तब नून के पुत्र यहोशु ने जो युवावस्था से मूसा का सेवक था, मूसा से कहा, "हे स्वामी मूसा, उन्हें रोक दे।"

सेवकाई के लिए रोकने और ईर्ष्या की आत्मा, सेवकाई को आराधना के स्थान में ही सीमित और समाये रखता है।

(29) पर मूसा ने उससे कहा, ''क्या तुझे मेरे कारण जलन होती है? अच्छा होता कि **यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते** और यहोवा अपना आत्मा उन **पर** डाल देता।''

मूसा परमेश्वर के दिल की बात कह रहा था।

❖ इस्राएल के लिए परमेश्वर के न्यायी :

न्यायियों 3:9 –10 और जब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी तो उसने इस्राएलियों के छुटकारे के लिए ... ओत्नीएल को खड़ा किया। यहोवा का आत्मा उस पर उतरा और वह इस्राएलियों का न्यायी बना।

न्यायियों 6:34 ''अतः यहोवा का आत्मा गिदोन पर उतरा ;''

न्यायियों 14:6 ''यहोवा का आत्मा शिमशोन पर ऐसी प्रबलता से उतारा ...''

न्यायियों 15:14 ''तब यहोवा का आत्मा उस पर बड़े बल के साथ उतरा और वे रस्सियां जो उसकी भुजाओं पर थीं वे आग से जले हुए सन की तरह हो गई और उसके हाथ के बन्धन गल कर गिर पड़े।''

❖ सेवकाई के लिए शाऊल का अभिषेक राजा के रुप में हुआ।

**1 शमूएल 10:1** तब शमूएल ने तेल की कुप्पी लेकर शाऊल के सिर **पर** उण्डेल दिया। फिर उसे चूमकर कहा, ''क्या यहोवा ने अपनी मिरास पर शासन करने के लिए तेरा अभिषेक नहीं किया? (5) इसके बाद तू परमेश्वर की पहाड़ी पर पहुंचेगा, जहां पलिश्तियों की छावनी है। और ऐसा होगा कि जैसे ही तू नगर में प्रवेश करे नबियों का एक दल अपने आगे सितार, डफ, बांसुरी और वीणा लिए हुएऊंचे स्थान से उतरते हुए तुझे मिलेगा, और वे नबूवत कर रहे होंगे। (6) तब यहोवा का आत्मा तुझ पर प्रबलता से **उतरेगा** जिससे तू भी उनके साथ **नबूवत करने लगेगा**, और **तू बदल कर और ही मनुष्य बन जाएगा**। (7) जब ये चिन्ह तुझे दिखाई दें तब तू अवसर के अनुकूल कार्य करना क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है।
(9) तब ऐसा हुआ कि ज्यों ही उसने शमूएल से विदा होने के लिए पीठ फेरी, त्यों ही परमेश्वर ने उसके हृदय को परिवर्तित कर दिया और वे सब चिन्ह उसी दिन पूरे हो गए। (10) जब वे उस पहाड़ी पर पहुंचे, तो देखो, नबियों का एक दल उसे मिला। **तब परमेश्वर का आत्मा सामर्थ के साथ उस पर उतरा** जिस से वह उनके बीच **नबूवत करने लगा**। (11) तब ऐसा हुआ कि जो शाऊल को पहले से जानते थे, जब उन्होंने उसको अन्य नबियों के साथ नबूवत करते देखा तब उन्होंने एक – दूसरे से कहा, कीश के पुत्र को क्या हो गया है? क्या शाऊल भी नबियों में से एक है?

❖ शाऊल का आज्ञा – उल्लंघन

1 शमूएल 15:22–23 तब शमूएल ने कहा, ''क्या यहोवा होमबलि और बलिदानों से उतना प्रसन्न होता है जितना अपनी **आज्ञा के माने जाने** से? सुन, **आज्ञा पालन** बलिदान से बढ़कर और **ध्यान देना** मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। क्योंकि **विद्रोह** करना **शकुन विचारने** के बराबर पाप है और **हठ** करना **मूर्तिपूजा** के समान

अर्धम है। इसलिए की तू ने परमेश्वर के वचन को अस्वीकार किया है उसने भी तुझे राजा होने के लिए अस्वीकार किया है।''

- ★ उसने अनन्त जीवन नहीं खोया – उसने अपना पद और अभिषेक खो दिया।

❖ शाऊल के आज्ञा – उल्लंघन का परिणाम

**1 शमुएल 16:13 दाऊद का अभिषेक किया जाना**
''तब शमूएल ने तेल भरा सींग ले कर उसके भाईयों के बीच में उसका **अभिषेक** किया। उसी दिन यहोवा का आत्मा दाऊद **पर** बल से उतरता रहा।''

1 शमूएल 16:14
''अब **यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया,** और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसको सताने लगी।''

- ★ अभिषेक परमेश्वर की इच्छा को करने की सामर्थ के लिए दिया गया था।
- ★ शाऊल परमेश्वर की **आज्ञा नहीं मान रहा था,** वह अंधकार के राजकुमार की आज्ञा मान रहा था। इस कारण से दुष्ट आत्मा !
- ★ ''यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा'' क्योंकि शाऊल परमेश्वर का था और दुष्ट आत्मा उसे छू भी नहीं पाती जब तक परमेश्वर अनुमति नहीं देता। उसने दे दी।

❖ एक दिलचस्प दृश्य
1 शमूएल 19:20 –24 तब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिए दूत भेजे। परन्तु जब उन्होंने नबियों के दल को नबूवत करते और शमूएल को उनकी अगुवाई करते देखा तो शाऊल के दूतों पर भी परमेश्वर का आत्मा **उतरा,** और वे भी **नबूवत** करने लगे। (21) जब शाऊल को इसकी सूचना दी गई तब उसने अन्य दूत भेजे, और वे भी **नबूवत** करने लगे। तब शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे और **वे भी नबूवत करने लगे**। तब वह स्वयं रामा गया ... और परमेश्वर का आत्मा उस पर भी **उतर** आया जिससे वह **नबूवत करते** हुए रामा के नायोत में पहुंचा। वहां पहुंच कर उसने भी <u>अपने वस्त्र उतार फेंके</u>, और शमूएल के सामने उसने भी नबूवत की। फिर वह सारे दिन और सारी रात <u>निर्वस्त्र</u> पड़ा रहा। इसीलिए, वे कहते हैं, ''क्या शाऊल भी नबियों में से है?''

- ★ हमें बहुत ध्यान से यह परखना चाहिए कि क्या परमेश्वर की ओर से है, और क्या नहीं।
- ★ परमेश्वर जानता है कि कैसे व्यक्ति के घमण्ड को दूर करे और उसे नम्र बनाए।

❖ नया नियम :

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का वक्तव्य
लूका 3:16 तो यूहन्ना ने उससे कहा, '' मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूं, परन्तु वह आने वाला है

जो मुझ से शक्तिमान है ; मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूतों का बन्धन खोल सकूं ; **वह तुम्हे पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।**

❖ पवित्र आत्मा के साथ यीशु का अनुभव :

यीशु अब 30 वर्ष का था, वह अपने इस पृथ्वी के पिता के प्रति सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा। अब उसके लिए समय था कि वह अपनी सेवकाई में आए।

लूका 3:21 –22 "जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु ने भी **बपतिस्मा लिया, और जब वह प्रार्थना कर रहा था**, तो आकाश खुल गया, (22) और **पवित्र आत्मा** शारीरिक रुप से कबूतर के समान **उस पर** उतरा, और यह आकाशवाणी हुईः "तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं।"

★ उसका बपतिस्मा यह प्रदर्शित करने की क्रिया थी कि वह अपने पुराने जीवन के लिए मर गया और अब अपने स्वर्गीय पिता की सेवा और आज्ञा मानने के लिए समर्पित है। इसलिए पवित्र आत्मा का अभिषेक उस पर हुआ।

लूका 4:1 –2, फिर यीशु **पवित्र आत्मा** से **भरा** हुआ, यरदन से लौटा ; और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा ; (2) वहां चालीस दिन तक शैतान उसकी परिक्षा करता रहा।

★ "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा" और "पवित्र आत्मा से भरे जाने" का अर्थ एक ही है।
★ जहां प्रथम आदम विफल हुआ वहां अन्तिम आदम विजयी हुआ।

परिणाम :

लूका 4:14 तब यीशु आत्मा की **सामर्थ** में गलील को लौटा और आस पास के प्रदेश में उसकी चर्चा फैल गई।

★ आज्ञाकारिता, शैतान की परिक्षाओं को "नहीं" कह कर – सामर्थ देता है !

❖ यीशु समझाते हैं कि पवित्र आत्मा उन पर क्यों है :

लूका 4:18 – 19
"प्रभु का आत्मा मुझ **पर** है, क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए **मेरा अभिषेक किया है।** उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सन्देश दूं और दलितों को छुड़ाऊं, (19) और प्रभु के अनुग्रह के समय की उद्घोषणा करुं।"

❖ पवित्र आत्मा पर यीशु की शिक्षा
यूहन्ना 14:12 मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास करता है, वे कार्य जो मैं करता हूं, **वह**

**भी करेगा**, और इनसे भी **महान कार्य करेगा**, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

यूहन्ना 14:16 "और मैं पिता से विनती करुंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे, (17) अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह उसे न देखता है और न जानता है, परन्तु तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह **तुम्हारे साथ** रहता है, और **तुम में होगा**।"

- ★ पवित्र आत्मा शिष्यों "में" नहीं था !
- ★ उनका नया जन्म नहीं हुआ था !
- ★ उनके सब प्रशनों का कारण यही है।
  "यह क्या बात है जो वह हम से कह रहा है ?"

1 कुरिन्थियों 2:14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातों को ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसके लिए मूर्खतापूर्ण हैं और वह उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उनकी परख आत्मिक रीति से होती है।

---

## अत: शिष्यों का नया जन्म कब हुआ ?

❖ पुनरुत्थान के दिन

यूहन्ना 20:21 –22 यीशु ने फिर उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले, **जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।**"

- ★ पिता ने पुत्र को कैसे भेजा ?
  - ◆ आत्मा से जन्मा
  - ◆ उस पर पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक और सामर्थ प्राप्त किए हुए।

(22) और जब वह यह कह चुका तो उसने उन पर फूंका और उनसे कहा, "यह पवित्र आत्मा लो।"

- ◆ "लो" (निश्चित भूतकालिक, सक्रिय, आदेशात्मक) वहीं और उसी समय प्राप्त करने वाली आज्ञा है।
- ◆ **पापों** को **हटा दिया और क्षमा कर** दिया, पवित्र आत्मा अब विश्वासी में निवास कर सकता है।
- ◆ पवित्र शास्त्र में और कहां हम परमेश्वर को मनुष्य पर फूंकते हुए देखते हैं?

- शिष्यों का **नया जन्म पुनरुत्थान के दिन पर** हुआ।

❖ लूका द्वारा दिए गए पुनरुत्थान के दिन के विवरण से तुलना करें

लूका 24:45 उसने **उनकी बुद्धि खोल दी** कि वे पवित्रशास्त्र को समझें।

★ उनकी बुद्धि जब खुली जब पवित्र आत्मा उन में आया :
- फिर उनका **नया जन्म** हुआ
- अब उनके पास आत्मिक समझ है।

❖ प्रत्येक विश्वासी "**में**" पवित्र आत्मा है।

रोमियों 8:9–11 यदि वास्तव में **पवित्र आत्मा तुम में वास करता है,** तो तुम शरीर में नहीं, वरन् आत्मा में हो। परन्तु यदि किसी में मसीह का आत्मा न हो तो वह उसका नहीं है। (10) यदि मसीह **तुम में** है तो यद्यपि शरीर पाप के कारण मृतक है, फिर भी आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है।(11) यदि उसका आत्मा जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया तुम **में** निवास करता है तो वहजिसने मसीह यीशु को मृतकों में से जीवित किया, तुम्हारी मरणहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम **में** वास करता है, जीवित करेगा।

❖ उन पर पवित्र आत्मा :

लूका 24:47 और यरुशलेम से प्रारम्भ कर के सब जातियों में उसके नाम से पापों की क्षमा के लिए मनफिराव का प्रचार किया जाएगा।

## उनको महान आज्ञा दी गई

लूका 24:49 "देखो, जिसकी **प्रतिज्ञा** मेरे पिता ने की है, मैं उसको **तुम पर** उण्डेलूंगा, परन्तु **जब तक** तुम स्वर्गीय **सामर्थ्य से परिपूर्ण** न हो जाओ, इसी नगर में ठहरे रहना।"
- उनका नया जन्म हुआ
- उनको महान आज्ञा दी गई ... परन्तु
- वे सेवा के लिए तैयार नहीं थे
- उनको अभिषेक / बपतिस्मा / सामर्थ्य नहीं दिया गया था

प्रेरितों के काम पुस्तक किसने लिखी ? लूका जो वैद्य था।

फिर हम प्रेरितों के काम की तरफ मुड़े और पढ़ें।

प्रेरितों के काम 1:1–5 हे थियुफिलुस, मैंने पहिले वृतान्त में उन सब बातों को लिखा जिन्हें यीशु ने आरम्भ से उस दिन तक किया और सिखाया (2) जब तक कि वह पवित्र आत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को आज्ञा देने के पश्चात उपर न उठा लिया गया।(3) अपने दुख – भोग के पश्चात उसने अनेक ठोस प्रमाणों से उन पर अपने आप को जीवित प्रकट किया, और **चालीस दिन** तक दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य

के विषय में उन से बातें करता रहा।

✎ **चालीस दिन का बाइबल स्कूल !** क्योंकि अब वे समझ सकते हैं

(4) उसने उन्हें एकत्रित करके यह आज्ञा दी, "यरुशलेम को न छोड़ना, वरन् पिता की उस **प्रतिज्ञा** के पूर्ण होने की प्रतिक्षा करना, जिसे तुमने मुझ से सुना है।(5) यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु अब से थोड़े दिनों के पश्चात तुम पवित्र आत्मा से **बपतिस्मा पाओगे**।"

प्रेरितों के काम 1:8
परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम **पर** आएगा तब तुम **सामर्थ** पाओगे, और यरुशलेम,सारे यहूदिया और सामरिया में, यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होगे।

❖ परिणाम और स्पष्टीकरण

प्रेरितों के काम 2:1 –13 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया , तो वे सब एक स्थान पर एकत्रित थे। (2) एकाएक आकाश से एक प्रचण्ड आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर , जहां वे बैठे थे, गूंज गया।(3) और उन्हें आग के समान जीभें विभाजित होती हुई दिखाई दीं, और उनमें से प्रत्येक पर आ ठहरी।(4) वे सब पवित्र आत्मा से **भर** गए, और जैसे आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे **अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे**।(5) यरुशलेम में यहूदी रहा करते थे, अर्थात वे भक्त जो आकाश के नीचे स्थित प्रत्येक देश से आए थे।(6) जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग भौंचक्के हो गए, क्योंकि प्रत्येक ने उनको **अपनी ही भाषा में बोलते सुना**।(7) वे आश्चर्यचकित और विस्मित हो कर कहने लगे, " यह सब जो बोल रहे हैं क्या गलीली नहीं ?(8) तब यह कैसी बात है कि हम में से प्रत्येक अपनी ही मातृ भाषा में उन्हें बोलते हुए सुनता है?(11) हम अपनी अपनी भाषा में इनसे परमेश्वर के सामर्थी कार्यों की चर्चा सुनते हैं।"

यूहन्ना 7:37 – 39 पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन था, यीशु खड़ा हुआ, और पुकार कर कहने लगा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि पवित्र शास्त्र में कहा गया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी '।" परन्तु यह उसने पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे, इसलिए कि पवित्र आत्मा अभी तक नहीं दिया गया था, क्योंकि यीशु अब तक महिमा में नहीं पहुंचा था। (यशायाह 44:3 ; 55:1 ; 58:11 )

यीशु अब मृतकों में से जिलाए जा कर, स्वर्ग में बैठा दिए गए और महिमान्वित किए गए हैं।

❖ तीन प्रकार की भाषाएं :

i) ऐसी भाषा बोलने का चमत्कार जो आप जानते नहीं।

1 कुरिन्थियों 14:20 –22 व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है, "मैं विदेशी भाषा बोलने वाले तथा विदेशियों के होठों से इस जाति से बातें करुंगा ... ," । (22) अतः अन्य भाषाएं विश्वासियों के लिए नहीं पर अविश्वासियों के लिए चिन्ह है ;

ii) पवित्र आत्मा के द्वारा आप में, मसीह के लिए प्रार्थना की भाषा।

1 कुरिन्थियों 14:2 क्योंकि जो अन्य भाषा में बोलता है वह मनुष्य से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है, क्योंकि कोई नहीं समझता, परन्तु वह आत्मा में भेद की बातें बोलता है।

1 कुरिन्थियों 14:4 जो अन्य भाषा में बोलता है वह अपनी ही उन्नति करता है।

1 कुरिन्थियों 14:5 अब मैं चाहता तो हूं कि तुम सब अन्य भाषाएं बोलते।

1 कुरिन्थियों 14:14 –15 क्योंकि यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करुं तब मेरी आत्मा तो प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। तो फिर हम क्या करें ? मैं आत्मा में प्रार्थना करुंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करुंगा। मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा।

✐ प्रेरितों के काम 2:4 ''जैसे आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे।''

◆ आपको अपना मूंह खोलना चाहिए तथा हवा अपने स्वर तंत्रिका पर लाएं परन्तु अंग्रेज़ी या स्वाभाविक भाषा बोलने से इनकार कर दें। पवित्र आत्मा तुम्हें प्रार्थना की भाषा देगा।

iii) अनुवाद के साथ नबूवत की जीभ

1 कुरिन्थियों 14:2 अब मैं चाहता तो हूं कि तुम सब अन्य भाषाएं बोलते, परन्तु इससे भी बढ़कर यह कि तुम भविष्यवाणी करो, क्योंकि जो भविष्यवाणी करता है, वह उस से भी बढ़कर है जो अन्य भाषा में बोलता तो है, **पर अनुवाद नहीं कर सकता कि कलीसिया की उन्नति हो।**

1 कुरिन्थियों 14:26 –28 **जब तुम एकत्रित होते हो** तो प्रत्येक के मन में भजन या उपदेश या प्रकाशन या अन्य **भाषा** या अन्य भाषा का **अनुवाद** होता है। सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए। (27) यदि कोई अन्य भाषा में बोले तो दो या अधिक से अधिक तीन जन क्रम से बोलें, तथा **एक व्यक्ति अनुवाद करे।**(28) परन्तु यदि अनुवादक न हो तो **वह कलीसिया में चुप रहे,** तथा अपने आप से और परमेश्वर से बोले।

✐ पतरस का भाषण :

प्रेरितों के काम 2:14–18 पतरस उन ग्यारहों के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से उपदेश देने लगा : ...... यह वह बात है जो योएल नबी के द्वारा कही गयी थी ;

" अन्तिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब लोगों पर उण्डेलूंगा। तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां नबूवत करेंगी। तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे वृद्ध जन स्वप्न देखेंगे। मैं अपने दासों और दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उण्डेलूंगा और वे नबूवत करेंगे।'' (प्रेरणा पाकर बोलेंगे)

प्रेरितों के काम 2:33, 37–39 (33) इसलिए परमेश्वर के दाहिने हाथ पर सर्वोच्च पद पाकर और **पिता से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त करके,** उसने इसे उण्डेल दिया जिसे तुम देखते और सुनते भी हो। (37) उन्होंने जब यह सुना तो उनके हृदय छिद गए और वे पतरस तथा अन्य प्रेरितों से पूछने लगे, ''भाईयों, **हम क्या करें ?**'' (38) पतरस ने उन से कहा, ''**मन फिराओ** और यीशु मसीह के नाम से तुम में से प्रत्येक **बपतिस्मा** ले कि तुम्हारे पाप क्षमा हो, और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे। (39) क्योंकि **वह प्रतिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारी सन्तान के लिए और उन सब के लिए है जो दूर दूर हैं, अर्थात वे सब जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।**''

★ प्रेरितों के काम 4:8, 31, 33 ; प्रेरितों के काम 6:3, 5, 8

❖ दूसरों पर पवित्र आत्मा का आना

★ सामरिया में फिलिप्पुस :

प्रेरितों के काम 8:4–6 अतः जो तितर –बितर हुए थे, घूम घूम कर वचन का प्रचार करने लगे, और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जा कर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। जब लोगों ने फिलिप्पुस की **बातें सुनीं और उन चिन्हों को देखा जिन्हें वह दिखा रहा था** तो उन्होंने एकचित्त होकर उसकी बातों पर ध्यान दिया।

प्रेरितों के काम 8:12 परन्तु जब उन्होंने **फिलिप्पुस का विश्वास किया** जो परमेश्वर के राज्य का **सुसमाचार** और यीशु के नाम का प्रचार करता था तो क्या पुरुष, क्या स्त्री – सब **बपतिस्मा लेने लगे।**

प्रेरितों के काम 8:14 –17 जब यरुशलेम में प्रेरितों ने सुना कि सामरिया ने परमेश्वर का **वचन ग्रहण किया** है, तो उन्होंने उनके पास पतरस और यूहन्ना को भेजा। उन्होंने वहां पहुंचकर उनके लिए प्रार्थना की कि **वे पवित्र आत्मा पाएं।** क्योंकि **वह अब तक उनमें से किसी पर नहीं उतरा था;** उन्होंने केवल प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया था। तब **उन्होंने उन पर हाथ रखे** और **उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।**

★ शाऊल का हृदय परिवर्त्तन : प्रेरितों के काम 9:17

''तब हनन्याह ने जाकर उस घर में प्रवेश किया और **उस पर अपने हाथ रख** कर कहा, ''भाई शाऊल, प्रभु यीशु जिसने तुझे उस मार्ग पर जिससे तू आ रहा था, दर्शन दिया, उसी ने मुझे तेरे पास भेजा है कि **तू फिर देखने लगे और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।**''

★ कुरनेलियुस का हृदय परिवर्त्तन : प्रेरितों के काम 10:44

जब पतरस यह वचन कह ही रहा था, तभी वचन के सब सुनने वालों पर **पवित्र आत्मा उतर आया।** और जितने ख़तना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, सब विस्मित हुए कि **पवित्र आत्मा का दान** गैरयहूदियों पर भी **उंडेला गया** है। क्योंकि वे उन्हें भिन्न भिन्न भाषाएं बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते हुए सुन रहे थे। तब पतरस ने कहा, ''क्या कोई जल को रोक सकता है कि ये लोग **जिन्होंने हमारे समान ही पवित्र आत्मा पाया है,** बपतिस्मा न पाएं? और उसने आज्ञा दी कि उनको यीशु मसीह के नाम में **बपतिस्मा** दिया जाए।

★ **इफिसुस में पौलुस :** प्रेरितों के काम 19:1–6

पौलुस ऊपर के प्रदेश से होता हुआ इफिसुस पहुंचा, और वहां पर उसे कुछ चेले मिले। उसने उनसे कहा, "**क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?**" उन्होंने उस से कहा, "नहीं, हमने तो सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा है।" तब उसने कहा, "फिर तुमने किस का बपतिस्मा लिया?" उन्होंने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा।" इस पर पौलुस ने कहा, यूहन्ना ने यह कह कर लोगों को मन फिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आने वाला है उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना।" यह सुनकर **उन्होंने यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया। जब पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न भिन्न भाषा बोलने तथा नबूवत करने लगे।**

❖ **पवित्र आत्मा को ग्रहण करना**

प्रेरितों के काम 2:38–39

**मन फिराओ** [अविश्वास से विश्वास की और फिरना और प्रभु यीशु को ग्रहण करना]

**बपतिस्मा** ले [अपने आपको यीशु के लिए और उसकी सेवकाई जो आपके लिए है अर्पण कर दें]

...... और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे। (39) क्योंकि **वह प्रतिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारी सन्तान के लिए और उन सब के लिए है जो दूर दूर हैं, अर्थात वे सब जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।"**

लूका 11:11–13 अतः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो तो **तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको जो उससे मांगते हैं पवित्र आत्मा क्यों न देगा?"**